IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बी0एड0 प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

*डॉ0 शिव स्वरूप शर्मा, **

*विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, खण्डेलवाल कॉलेज ऑफ मैनेजमेण्ट साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश

गरिमा अवस्थी , एम् एड द्वितीय वर्ष ,क0 सी0 एम0 टी0 ''

सारांश

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युग की पल–पल बदलती धारणाओं व मूल्यों, भौतिक परिदृश्य ने शिक्षक की भूमिका व कार्य को और भी अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा 1998 ई0 में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार की गई जिसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षकों को तैयार करने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0एड0 की न्यूनतम समयावधि बढ़ाकर दो शैक्षणिक वर्ष का प्रावधान प्रस्तुत किया गया।

शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) भारत सरकार द्वारा 2011 में शिक्षण में मानकों में सुधार के लिए शुरू की गई थी। पहले से काम कर रहे शिक्षकों से दो साल के भीतर परीक्षा पास करने की उम्मीद की गई थी। शिक्षक पात्रता परिक्षा जिसे टीईटी के रूप में जाना जाता है। भारत में कक्षा एक से आठवीं तक के शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होने के लिए भारत मे आवश्यक न्यूनतम योग्यता है। भारतीय सरकारी स्कूलों में शिक्षण कार्य के लिए परीक्षा अनिवार्य है।

मूलशब्दः भौतिक परिदृश्य, अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम, शिक्षक पात्रता परीक्षा

प्रस्तावना

किसी भी समाज एवं राष्ट्र का विकास सर्वाधिक उसके भावी शिक्षित नौजवानों पर निर्भर होता है। शिक्षा एक जीवन–पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, मगर जब हम औपचारिक शिक्षा की बात करते हैं तो इस प्रक्रिया में तीन मुख्य स्तम्भ होते हैं– शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षार्थी। शिक्षा और शिक्षार्थी के बीच की कड़ी है– ''शिक्षक अर्थात् अध्यापक।'' यदि कड़ी ही कमजोर होगी तो किसी विद्यार्थी से सम्पूर्ण विकास की आशा कैसे की जा सकती है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उभरती चुनौतियों के समक्ष कुशल प्रशिक्षित शिक्षक ही शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में अपनी अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित कर पाने में सक्षम रह पाते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह वातावरणीय परिस्थितियों में नित्य नये अनुभव प्राप्त करता है। इन अनुभवों के आधार पर वह कुछ कार्यों के करने में रूचि लेने लगता है जबकि कुछ कार्यों को करने से कतराता है। इसी प्रकार वह कुछ व्यक्तियों से बड़ी आत्मीयता से मिलता है जबकि कुछ लोगों से घृणा करने लगता है। इस प्रकार उसकी व्यवहार करने की एक शैली बन जाती है जो उसकी आदतों, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों की परिचायक होती है। अभिवृत्तियों किसी व्यक्ति अथवा समूह की अधिक अथवा कम स्थाई तथा अवलोकनीय वह प्रवृत्ति है जो किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के बारे में कुछ विशिष्ट प्रकार से देखने–सोचने अनुक्रिया करने के लिये प्रेरित करती है। अतः अभिवृत्तियाँ किसी व्यक्ति अथवा समूह को पूर्व प्रयोजित ढंग से मूल्यांकन करने का कार्य करती है। जब अभिवृत्तियों का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जाता है तथा इसमें स्थायित्व आ जाता है तो यह व्यक्ति के मूल्यों के रूप में विकसित हो जाती है।

अध्यापक पात्रता परीक्षा (टीईटी) भारत सरकार द्वारा 2011 में शिक्षण में मानकों में सुधार के लिए शुरू की गई थी। पहले से काम कर रहे शिक्षकों से दो साल के भीतर परीक्षा पास करने की उम्मीद की गई थी।

जिसके दो पेपर है पेपर 1 कक्षा एक ही पाँच के शिक्षकों के लिए और पेपर 2 कक्षा 6 से 8 के शिक्षकों के लिए। टीईटी भारत की केन्द्र और राज्य सरकारों द्वारा संचालित किया जाता है।

अधिकांश राज्य अपना टीईटी आयोजित करते है। बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2005 के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परीक्षा आयोजित की जाती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध में नवीन द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम के प्रति अध्यापकों, प्रशिक्षुओं एवं अभिभावकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0एड0 का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों दृष्टिकोणों से उसके कर्तव्य पालन के लिए तैयार करना है, जिससे वह अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सकें। इसी को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम बी0एड0 को अधिक उपादेय व व्यवहारिक बनाने हेतु राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा बी0एड0 की उपाधि हेतु न्यूनतम समयावधि को एक वर्ष से बढ़ाकर दो शैक्षणिक वर्ष करने का प्रावधान सुनिश्चित किया गया है। अतः इस

परिवर्तन के संदर्भ में विभिन्न शिक्षाविदों, अध्यापकों, प्रशिक्षुओं व अभिभावकों के दृष्टिकोण को जानना आवश्यक है।

समस्या का कथन

बी0एड0 प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

बी0एड0 प्रशिक्षुः बी0एड0 प्रशिक्षुओं से तात्पर्य उन विद्यार्थियों (प्रशिक्षुओं) से है जो बी0एड0 पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है।

टी0ई0टी0: शिक्षक पात्रता परीक्षा जिसे टीईटी के रूप में जाना जाता है। भारत में कक्षा एक से आठवीं तक के शिक्षक के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होने के लिए भारत में आवश्यक न्यूनतम योग्यता है।

अभिवृत्तिः अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है। इसका सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के मानसिक पक्ष से होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बी0एड0 महिला एवं पुरूष प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. बी0एड0 ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. बी0एड0 सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. बी0एड0 कला एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें

1. बी0एड0 महिला एवं पुरूष प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बी0एड0 ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बी0एड0 सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. बी0एड0 कला एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

1. केवल बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत् विद्यार्थियों तक सीमित रखा जाएगा।
2. न्यादर्श हेतु 120 बी0एड0 प्रशिक्षुओं तक ही सीमित रखा जाएगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

राज किशोर रॉय (2018) ने उत्तर उड़ीसा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् शिक्षक प्रशिक्षुओं पर टीईटी के प्रति अभिवृत्ति सम्बन्धित एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने यह पाया कि बी0एड0 के छात्र–छात्राओं की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

उर्मिला (2018) ने भुवनेश्वर विश्वविद्यालय के 200 बी0एड0 विद्यार्थियों से उनका टीईटी के प्रति मत जानने हेतु एक शोध किया। इस शोध के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शहरी छात्रों में टीईटी के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति थी। साथ ही विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा टीईटी के प्रति अधिक उत्साह पाया गया।

शोध कार्य की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद बरेली के समस्त बी0एड0 स्तर के महाविद्यालय आते है तक सीमित किया गया है।

न्यादर्श एवम् न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में यादृच्छिक विधि द्वारा 6 महाविद्यालयों से कुल 120 बी0एड0 प्रशिक्षुओं का चयन किया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

1. प्रथम परिकल्पना परीक्षण ''**बी0एड0 महिला एवं पुरूष प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' में पाया गया पुरूष प्रशिक्षुओं का मध्यमान महिला प्रशिक्षुओं के मध्यमान से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.32 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 1.98 तथा 2.63 अर्थात् 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् बी0एड0 महिला एवं पुरूष प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. द्वितीय परिकल्पना परीक्षण ''**बी0एड0 ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' में पाया गया ग्रामीण प्रशिक्षुओं का मध्यमान शहरी प्रशिक्षुओं के मध्यमान से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.18 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 1.98 तथा 2.63 अर्थात् 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् बी0एड0 ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. तृतीय परिकल्पना परीक्षण ''**बी0एड0 सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' में पाया गया गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं का मध्यमान सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं के मध्यमान से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.72 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 1.98 तथा 2.63 अर्थात् 0.05 एवं

0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् बी0एड0 सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. चतुर्थ परिकल्पना परीक्षण ''**बी0एड0 कला एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है**'' में पाया गया कला वर्ग के प्रशिक्षुओं का मध्यमान विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं के मध्यमान से अधिक है। टी–परीक्षण का प्रयोग करने से प्राप्त टी–मान 0.12 प्राप्त हुआ, जो कि सार्थकता स्तर 1.98 तथा 2.63 अर्थात् 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् बी0एड0 कला एवं विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. ऐसे कार्यक्रमों को राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षा का आयोजन किया जाए जिससे लोगों में और जागरूकता बढ़े।
2. प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति के लिये नई तकनीकों का प्रयोग कराया जाए।
3. शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति विद्यालयों में समय–समय पर संगोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए।
4. शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति को प्रत्येक शिक्षा स्तर पर अनिवार्य कर दिया जाए।

भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत अध्ययन बरेली जनपद के बी0एड0 प्रशिक्षुओं पर किया गया है जबकि भविष्य में यह अध्ययन राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर किया जाना चाहिए।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल बी0एड0 प्रशिक्षुओं को लिया गया है भविष्य में इसे शिक्षामित्रों पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल न्यादर्श के रूप में 120 बी0एड0 प्रशिक्षुओं को लिया गया है भविष्य में इसे बड़े न्यादर्श पर भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 प्रशिक्षुओं में शिक्षक पात्रता परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर अध्ययन किया गया है भविष्य में हम समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर भी अध्ययन कर सकते है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में बी0एड0 प्रशिक्षुओं पर अध्ययन किया गया है भविष्य में हम एम0एड0 विद्यार्थियों एवं रिसर्च स्कोलॉरों पर भी अध्ययन कर सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बुच, एम0बी0 (1987) ''थार्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', नई दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0।
2. बुच, एम0बी0 (1988) ''फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', नई दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0।
3. बुच, एम0बी0 (1991) ''फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', नई दिल्ली, एन0सी0ई0आर0टी0।

4. पचौरी गिरीश (2008) ''शिक्षा के दार्शनिक आधार'', मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
5. सक्सेना, एन0आर0 एवं मिश्रा, वी0के0 (2008) ''अध्यापक शिक्षा'', मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
6. सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप एवं चतुर्वेदी शिखा (2009) ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो।
7. पाण्डेय रामशकल (2010) ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक'', आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स।